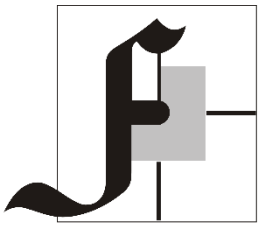

Front desk

Jainism Forum

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from an online repository and is presented here as part of the **Front Desk Jainism Forum (FDJF)** collection. It is shared under commonly accepted Fair Use guidelines, intended for individual educational or research purposes.

To the best of our knowledge, this book resides in the public domain, and we believe the original repository intended for its public dissemination. We wholeheartedly applaud and support their efforts, and our intent in providing this version is solely to make the book accessible to a broader audience. The **FDJF** group values the importance of cataloging in making valuable works discoverable and strives to support these efforts through our initiatives.

In some cases, original sources may no longer be accessible, are difficult to locate, or are provided in Indian languages instead of English, limiting their reach. The **FDJF** aims to address these challenges by expanding access while supporting repositories and digitization projects. Our intent is to complement—not undermine—these efforts.

For more information about our mission and fair use guidelines, please visit our website. While we make these works available with the understanding that they are in the public domain within our jurisdiction, we advise users to confirm their legal rights to access and use this material in their own jurisdiction before downloading.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection and have concerns about its presentation or availability, please email us. We are committed to addressing any objections promptly and respectfully. This notice serves both to inform readers and to clarify our intent and responsibility regarding these works.

The FDJF team

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

फेयर यूज़ घोषणा

यह पुस्तक एक ऑनलाइन भंडार (repository) से प्राप्त की गई है और यहाँ *फ्रंट डेस्क जैनिज़्म फोरम (FDJF)* संग्रह के अंतर्गत प्रस्तुत की जा रही है। इसे सामान्यतः स्वीकृत *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के अनुसार साझा किया गया है, जिसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत शैक्षिक एवं शोध उपयोग है।

हमारी जानकारी के अनुसार, यह पुस्तक सार्वजनिक डोमेन में है और हमें विश्वास है कि मूल भंडार का उद्देश्य इसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराना था। हम उनके प्रयासों की सराहना और समर्थन करते हैं। इस संस्करण को उपलब्ध कराने का हमारा एकमात्र उद्देश्य पुस्तक को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाना है। FDJF समूह मूल्यवान कृतियों को खोजने योग्य बनाने में सूचीकरण (cataloging) के महत्व को समझता है और अपनी पहलों के माध्यम से इन प्रयासों का समर्थन करता है।

कुछ मामलों में, मूल स्रोत अब उपलब्ध नहीं होते, उन्हें ढूँढना कठिन होता है, या वे भारतीय भाषाओं में होते हैं, जिसके कारण उनकी पहुँच सीमित रह जाती है। FDJF का उद्देश्य इन चुनौतियों का समाधान करते हुए पहुँच का विस्तार करना है, साथ ही भंडारों और डिजिटलीकरण परियोजनाओं का समर्थन करना है। हमारा उद्देश्य इन प्रयासों को कमजोर करना नहीं, बल्कि उनका पूरक बनना है।

हमारे उद्देश्य और *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट देखें। यद्यपि हम इन कृतियों को इस समझ के साथ उपलब्ध कराते हैं कि वे हमारे अधिकार क्षेत्र में सार्वजनिक डोमेन में हैं, फिर भी हम उपयोगकर्ताओं को सलाह देते हैं कि डाउनलोड करने से पहले अपने अधिकार क्षेत्र में इस सामग्री तक पहुँच और उपयोग से संबंधित अपने कानूनी अधिकारों की स्वयं पुष्टि करें।

यदि आप इस या हमारे संग्रह की किसी अन्य पुस्तक के बौद्धिक संपदा स्वामी हैं और इसकी प्रस्तुति या उपलब्धता को लेकर कोई आपत्ति या चिंता है, तो कृपया हमें ईमेल करें। हम सभी आपत्तियों का त्वरित और सम्मानपूर्वक समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सूचना पाठकों को अवगत कराने के साथ-साथ इन कृतियों के संबंध में हमारे उद्देश्य और जिम्मेदारी को स्पष्ट करने के लिए दी गई है।

FDJF टीम

श्री वासुपूज्य विधान

पीठिका

(दोहा)

वासुपूज्य जिनराज की तीन योग से आज।
करूँ वंदना हे प्रभो ! सिद्ध करो मम काज ॥१॥

चौपाई

चम्पापुर में जन्म लिया था, सबके सुख का काम किया था।
जयावती के नयन सितारे, वासुपूज्य हो पूज्य हमारे ॥२॥

बारहवें तुम तीर्थंकर हो, तीन लोक के क्षेमंकर हो।
दीक्षा लेकर निज को ध्याया, भव्य जनों का पाप मिटाया ॥३॥

षट्खण्डी भी आकर झुकते, ऋषि-मुनि गणधर तुमको जपते।
चार घातिया घात किये हैं, ज्ञान सुदर्शन साथ लिये हैं ॥४॥

सौख्य वीर्य भी अद्भुत तेरा, उठ जावे मम भव का डेरा।
आतम में ही जाग रहे हो, भव-सागर के पार गये हो ॥५॥

वसु मद तजकर वसु गुण पाये, अष्टम वसुधा में महकाये।
आठ कर्म को मूल उखाड़ा, तुमने पाया सुख का द्वारा ॥६॥

महाशुक्र से तुम आये थे, स्वर्ग लोक के सुख पाये थे।
बचपन में ही विरत हुए थे, आतम में ही निरत हुए थे ॥७॥

तीन लोक में गौरव पाया, सबको शिव का पथ दर्शाया।
चेतन भूतल पर तुम रहते, शुद्ध-बुद्ध तुम निज में रमते ॥८॥

छत्र चमर भामण्डल पाये, सुर नर किन्नर तुम पद आये।
सौ-सौ मेरे भाग्य खुले हैं, दुर्लभ तेरे दर्श मिले हैं ॥९॥

कोटि-कोटि मैं वन्दन करता, श्रद्धा से मन चन्दन बनता।
अतः आपके चरण पड़ूँगा, केवल तेरी शरण रहूँगा ॥१०॥

तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊँ, लौट न भव में फिर मैं आऊँ।
भक्ति आपकी पूरी करता, फिर-फिर चरणों में सिर धरता ॥११॥

परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि/क्षिपेत्

विधान पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

चम्पापुर मंदारगिरी से, जो भवदधि के पार गये।
वासव पूजित वासुपूज्य वे, भव्य जनों को तार गये॥
बचपन में ही असिधारा व्रत, ग्रहण किया था धन्य हुए।
उनकी पूजा करने स्वामी, भाव हमारे रम्य हुए॥
आह्वानन है आपका, स्थापन कर जिनराज।
सन्निधि करता पूजने, उदय हुआ सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं! ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं! ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं!

अष्टक

(ज्ञानोदय)

शुद्ध सुनिर्मल स्वच्छ सुपावन, जल के कलशा भर लाया।
चरण चढ़ाकर पूज्य आपके, चरण पूजने मैं आया॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव भी, वासुपूज्य को पूज रहे।
वसुराजा के पुत्र आप में, गणपति सुरपति रीझ रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं....।

कालागरु का मलयागिरि का, चंदन घिसकर लाया हूँ।
पाप-ताप को शीतल करने, पाद-पद्म में आया हूँ॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव भी, वासुपूज्य को पूज रहे।
वसुराजा के पुत्र आप में, गणपति सुरपति रीझ रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः संसार-तापविनाशनाय चंदनं...।

खुशबू वाले वासमती के, तन्दुल थाली भर लाया।
तुम्हें पूजकर धन्य हुआ मैं, युगल चरण पा सुख पाया॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

कल्पवृक्ष के रंग बिरंगे, खिले पुष्प ले आया हूँ।
बाल ब्रह्ममय तुम्हें चढ़ाकर, मन वश करने आया हूँ॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

लाडू पेड़ा घेवर बावर, प्रासुक शुद्ध बनायें हैं।
भूख मिटाने भक्त चरण में, थाली भरकर लाये हैं॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मणिमय दीपक लेकर स्वामी, प्रतिदिन पद में आऊँगा।
मिथ्यातम मिट जावे मेरा, पूजा नित्य रचाऊँगा॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप दशांगी खुशबू वाली, पाद युगल में भेंट करूँ।
ध्यान अग्नि में कर्म जलाकर, शिव ललना से भेंट सकूँ॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

ऐला गोला किसमिस काजू, उत्तम-उत्तम फल लाया।
लौकिकफल की चाह मिटी सो, मोक्षमहाफल मन भाया॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव भी, वासुपूज्य को पूज रहे।
वसुराजा के पुत्र आप में, गणपति सुरपति रीझ रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

चंदन पानी अक्षत दीपक, पुष्प धूप चरु फल लाया।
सभी मिलाकर अर्घ बनाकर, तुम्हें चढ़ाकर हरषाया॥
वासुदेव प्रतिवासुदेव...॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ...।

प्रत्येक-अर्घ्य

(दोहा)

अष्टक देकर हे प्रभो! अष्टम वसुधा काज।
अर्घ चढ़ाऊँ चाव से, आप रहे शिवराज॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

जन्मातिशय के १० अर्घ्य

(लय—कहाँ गये चक्री जिन...)

स्वेद कभी ना आ पायेगा, स्वामी तुम तन में।
वासुपूज्य तव पाद-पद्म ये, भाये मम मन में॥
भूत प्रेत अब दिख न सकेंगे, देखा तुमको जो।
अहो अलौकिक नंद सु स्वामी, आया मुझको तो॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निःस्वेदत्व-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

राध-रुधिर मल रहित देव तुम, निर्मल देही हो।
गणधर मुनिगण आप चरण में, आते स्नेही हो॥

वासुपूज्य को जो भी आकर, पूजे नाचेगा।
अष्टम वसुधा पाकर वो भी लौट न आवेगा॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निर्मलत्व-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

लाल रक्त भी श्वेत बना है, तुम तन में स्वामी।
वत्सलता बतलाता तेरी, सबमें अभिरामी॥
वासुपूज्य जी तुम्हें देखकर, चेतन ललचाया।
सब कामों को छोड़ आपके, चरणों झट आया॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षीर-गौररुधिरत्व-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

सुडौल सुंदर समुचित तन, को कैसे पाया है।
सब जीवों को सुख ही सुख हो, मन में भाया रे॥
मात्र आपकी अर्चा मेरे, हृदय समायी है।
इसीलिए तो वासुपूज्य की पूज रचायी है॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समचतुरस्त्र-संस्थान-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

सुगंध वाली सभी वस्तुएँ, लज्जित हो जावें।
आप देह की सौरभ से तो, किसके मन भावे॥
वासुपूज्य की पूजा से तन ममता टूटेगी।
राग रंग की भाव कालिमा, जल्दी छूटेगी॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौगन्ध्य-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

महाबली की, महामल्ल की, ताकत फीकी है।
ब्रह्मचर्य की कलालोक ने, तुमसे सीखी है॥
वासुपूज्य जी आप भक्त को, क्या-क्या मिलता है।
राहु-केतु भी शीश झुकाते मानस खिलता है॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वज्रवृषभनाराच-संहनन-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

अतुलनीय है, अनुपम भी है, वीर्य देह का ये।
पाया तुमने किन्तु न उसमें, भाव प्रेम का है॥
वासुपूज्य का चरण पुजारी, आतम बल पावे।
मोक्ष महल का बने निवासी, देह न फिर पावे॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्रमितवीर्य-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मीन साथिया शंख ध्वजा जो, लक्षण तन सोहे।
कहते इनका नाम जपो ये, जग में मंगल है ॥
अरुण-तरुण का तेज छुपेगा, तेरे तन आगे।
वासुपूज्य जी आप दर्श से, संकट सब भागे॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौलक्षण्य-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मीठे हित-मित आकर्षक जो, आप बोलते हैं।
दीन दुखी के जीवन में भी, सौख्य घोलते हैं ॥
अतिशय माना जन्म समय से, महिमा गाऊँ मैं।
वासुपूज्य की पूजा करके, शिवगति पाऊँ मैं॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं प्रिय-हित-वादित्व-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

रंग रूप से सौष्ठवता से, देवों को जीता।
आत्मध्यान में लीन हुए तुम, अघ से हो रीता ॥
वासुपूज्य की पूजा करले, वासव पूजेंगे।
पुण्य बढ़ेगा दुःख मिटेगा, पातक रूठेंगे॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौरूप्य-जन्मातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

केवलज्ञानातिशय के १० अर्घ्य

(चौपाई)

सौ योजन तक धरती सारी, बन जाती है प्यारी-प्यारी।
सुभिक्ष होता देश-देश में, आप पधारे पूज्य वेश में ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गव्यूतिशत-चतुष्टय-सुभिक्षत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

गगन विहारी भू ना छूते, वासुपूज्य के अघतम छूटे।
घातिकर्म के क्षय से पाया, अतिशय सबके मन को भाया ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गगनगमनत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

खाते-पीते कभी नहीं है, फिर भी काया पुष्ट रही है।
वासुपूज्य जी सबको तारो, भव्य जनों को पार उतारो ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भुक्त्यभाव-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

विहार हो या दिव्य देशना नहिं होवेगी कभी वेदना।
किसी जीव को वासुपूज्य से, पूजक बनते जगत् पूज्य हैं ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्राणिवधत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

नर तिर्यग् या देव असुर भी, नहीं करे उपसर्ग कभी भी।
घाति नाश का अतिशय पाया, देख आपको मन हर्षाया ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं उपसर्गाभाव-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

समवसरण में सभी जीव को, आनन दिखता शोभनीय जो।
वासुपूज्य की महिमा गाऊँ, दरश आपके फिर-फिर पाऊँ ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्मुखत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

तीन लोक की विद्याएँ आ, पुलकित होती आप शरण पा।
वासुपूज्य के चरण पूजता, वैभव उसके चरण चूमता ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वविद्येश्वरत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

परमौदारिक देह बना है, छाया का नहिं काम बचा है।
चार कर्म को नाश किया है, वासुपूज्य शिव पास किया है ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अच्छायत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

नहीं झपकती पलकें स्वामी, भक्त बनेगा पल में नामी।
वासुपूज्य जी ताल बजाऊँ, नाचूँ-गाऊँ अर्घ चढ़ाऊँ ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अपक्ष्मस्पन्दत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

वृद्धि रहित नाखून बाल हैं, पूजे मिलती सौख्य चाल है।
वासुपूज्य ने अतिशय पाया, महिमा सुन मैं चरणों आया ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समान-नख-केशत्व-घातिक्षय-जातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

देवकृत अतिशय के १४ अर्घ्य

(दोहा)

दिव्य देशना जब खिरी, समझ गये सब जीव।
शंका सारी तब मिटी, मिटी सभी की पीर ॥
चंपापुर में जन्म ले जयावती तव मात।
पूजें आठों याम हम, समझ तुम्हें निज तात ॥२१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वार्धमागधी-भाषा-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मैत्री होती सर्व में, जन्म-जात भी वैर।
मिट जाता है, अर्चना, कर ले नहिं कर देर ॥

बाल अरुण सा वर्ण है, बाल अरुण से देव।
नाच-नाचकर अर्घ दूँ नौ मेरी अब खेव ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन-मैत्री-भाव-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

षड्ऋतुओं के फूल से, फल से खिलते वृक्ष।
जहाँ विचरते पूज्य तुम, जैन धर्म अध्यक्ष ॥
भारत भू की शान हो, वासुपूज्य भगवान।
अनुपम अद्भुत अर्घ ले, पूजूँ हे गतमान ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वर्तुफलादि-शोभित-तरुपरिणाम-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

धरती दर्पण सम करें, स्वर्गपुरी के देव।
अतिशय चौथा ये रहा, मिटे पाप की टेव ॥
वासुपूज्य को पूजता, जपता इनका नाम।
विघ्न कष्ट सब दूर हो, सहज बने सब काम ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आदर्शतल-प्रतिमारत्नमयी-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

समवसरण आता यदा, वायु बहे अनुकूल।
नहीं नाम दुख दर्द का, मिल जावे भवकूल ॥
सास ससुर नहिं नार ना, चीजों की भरमार।
फिर भी त्रिभुवन नाथ हैं, वासुपूज्य सुख सार ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विहरण-मनुगत-वायुत्व-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जहाँ पड़े पद आपके, हर्ष बरसता नित्य।
जो पूजे सब काम तज, जीवन बनता सत्य ॥
बजा - बजाकर वाद्य जो, पूजेगा दिन - रात।
वासुपूज्य को वो बने, तीन लोक का नाथ ॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन-परमानन्दत्व-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

कण्टक-कंकड़ धूल से, रहित भूमि बन जाय।
चरण आपके जो पड़े, निज की सुध आ जाय॥
त्रिभुवनपति से पूज्य की, अर्चा है सुख सार।
वासुपूज्य की अर्चना, से खुलता शिवद्वार॥२७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वायुकुमारोपशमित - धूलि - कंटकादि-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मेघ जाति के देव आ, गंधोदक की वृष्टि।
करते जो तव भक्ति तो, होती सुख की सृष्टि॥
वसु विधि मंगल द्रव्य ले, पूजे बनकर शिष्य।
कड़वा-मीठा छोड़कर, बन जावे वह शिष्ट॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मेघकुमारकृत-गन्धोदकवृष्टि-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

रखते जाते देव आ, सहस पत्र के पद्म।
जहाँ चरण निक्षेप हो, आप रहे सुख सद्म॥
आत्म निकेतन में रहा, वासुपूज्य तव स्नेह।
पूजूँ तीनों काल मैं, उमड़ा तुममें स्नेह॥२९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पादन्यासेकृत-पद्मानि-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

फल फूलों से नम्र हो, झुक जाते हैं वृक्ष।
पूजा कर ले भव्य तू, मिट जावें दुख कक्ष॥
वासुपूज्य को देखकर, हर्षे पूजे आज।
आपद में भी भक्त के, नहिं आवेगी आँच॥३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं फल-भार-नम्र-शालि-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

शारद ऋतु सम शीघ्र ही, निर्मलतम आकाश।
जिसके उर में आप हो, पाप न आते पास॥
सूर्य उदय से ज्यों मिटे, अंधकार की श्वास।
वासुपूज्य की अर्चना, देती है सुख खास॥३१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरत्कालवन्निर्मल-गगनत्व-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

आओ-आओ शीघ्र ही, यों कहते हैं वाद्य।
श्री जिनवर को पूज ले, मोक्ष बनाकर साध्य॥
देख चन्द्र को ज्यों खिले, कुमुद सरोवर शीघ्र।
वासुपूज्य को देखकर, होवे वृष में अग्र॥३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं एतैतैति - चतुर्निकायामर - परस्पराह्वानन-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

शरद काल में मेघ सम, सभी दिशाएँ शुद्ध।
स्वर्गी करते प्राज्ञजन, देख बने प्रतिबुद्ध॥
तरुण अरुण का तेज भी, कांतिहीन हो जाय।
वासुपूज्य को पूज ले, रिपु बान्धव बन जाय॥३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरन्-मेघवन्निर्मल-दिग्विभागत्व-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

झग-झग करता आपके, आगे धर्म सुचक्र।
चलता कहता पूज लो, मिट जावे भवचक्र॥
सेना साध्वी मुख्य थी, आप चरण की भक्त।
वासुपूज्य की भक्ति में मन मेरा आसक्त॥३४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धर्मचक्रचतुष्टय-देवोपनीतातिशय-गुणधारक श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

अष्टप्रातिहार्य के ८ अर्घ्य

(घत्ता)

जो सिंहासन है, शिव आसन है, मोक्षपुरी का दाता है।
वह मोक्षपथी ही, पुण्यमती ही, पुरुषार्थों से पाता है॥
श्री वासुपूज्य ने, जगतपूज्य ने, आत्मलीन हो पाया है।
यह भक्त भाव से, बड़े चाव से, तुम्हें पूजने आया है॥३५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सिंहासन-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जब बाजे बजते, मन को हरते, तीन लोक के नायक के।
शुभ शिव में जाने, दुन्दुभि पाने, वासुपूज्य ही लायक हैं॥
वे ढम-ढम बाजे, झुनिया साजे, समवसरण जब बनता है।
जो अर्घ चढ़ाता, पाप मिटाता, सुख ही सुख में रमता है॥३६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुन्दुभि-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

गतशोक वृक्ष में, आप पक्ष में, अपना काल बितायेंगे।
हम आप चरण पा, आप शरण आ, तप के भाव जगायेंगे॥
सब सुरगण आकर, तुमको पाकर, ठुमक-ठुमककर नाच रहे।
जो अर्घ चढ़ा दे, भाव बढ़ा ले, आ सकती नहिं आँच अरे॥३७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अशोकवृक्ष-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जो चौंसठ चामर, ढोरे आकर, स्वर्गपुरी के देव अहो।
श्री वासुपूज्य पे, करूँ पूज मैं, इससे अच्छा काम कहो॥
क्या हो पायेगा, शिव जायेगा, आप बिना क्या कोई भी।
मैं अर्घ सुलाऊँ, चरण चढ़ाऊँ, जगे चेतना सोई जी॥३८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुःषष्ठि-चामर-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जो पीछे दिखता, सुख ही मिलता, उसे देखकर जीवों को।
वह भामण्डल है, सुख मण्डल है, देख मिटावे पीवों को ॥
हम पूजन करने, भव से बचने, वासुपूज्य पद आयेंगे।
फिर क्यों भटकेंगे, नहिं अटकेंगे, मनहर अर्घ चढ़ायेंगे ॥३९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भामण्डल-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

ये तीन छत्र हैं, आतपत्र हैं, आप शीश पर शोभ रहे।
वे रजतमयी हैं, सौख्यमही हैं, चंद्रकान्ति को रोक रहे ॥
वह प्रातिहार्य है, जगततार्य है, वासुपूज्य ने पाया है।
यह भक्त शरण ले, चरण कमल में, अर्घ चढ़ाने आया है ॥४०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं छत्रत्रय-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

सुन आप देशना, पूज्य वेष ना, तीन लोक में हो सकता।
वह परम दिगम्बर, पूर्ण निरम्बर, धार पाप को खो सकता ॥
जो पद आवेगा, सुख पावेगा, पूजा नित्य रचावेगा।
जब छोड़े ममता, धारे समता, शीघ्र शिवालय जावेगा ॥४१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दिव्यध्वनि-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

तब पुष्पवृष्टि हो, सौख्य सृष्टि हो, वासुपूज्य जब आते हैं।
सुर कल्पवृक्ष के, विविध पक्ष के, देव पुष्प बरसाते हैं ॥
हम अर्घ चढ़ाने, निज को पाने, आप चरण में आये हैं।
प्रभु तुमको पाकर, अर्घ चढ़ाकर, चित्त आज हरषाये हैं ॥४२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्य-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक के ५ अर्घ्य

(लय—मुनि सकलव्रती बड़भागी...)

आषाढ़ कृष्ण की आयी, जब तिथि छठवीं मन भायी।
तब गर्भ पधारे स्वामी, श्री वासुपूज्य जगनामी ॥४३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गर्भकल्याणक-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

वह चौदस फाल्गुन काली, तब फैल गयी खुशहाली।
भू आये जग के चंदा, श्री जयावती सुख नंदा ॥४४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्म-कल्याणक-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

वह जन्म दिवस की बेला, मन विरत भाव से खेला।
श्री वसुराजा के नंदन, मम मेटो भव के बंधन ॥४५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तपः कल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जब माघ मास की दूजी, वह तिथि पा दुनिया रीझी।
तब केवलज्ञान सुपाया, सुर समवसरण रचवाया ॥४६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ज्ञान-कल्याणक-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

शुभ शुक्ला चौदश आयी, वह भादव की सुखदायी।
श्री वासुपूज्य ने पाई, भव दुख से आज विदाई ॥४७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोक्ष-कल्याणक-मण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

अनंत-चतुष्टय के ४ अर्घ्य

जय झलके सब पर्यायें, हम उसको पाने आये।
वह ज्ञान रहा दुखशोधी, श्री वासुपूज्य भवरोधी ॥४८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तज्ञान गुणमण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जब केवल दर्शन पाया, शिव नारी को ललचाया।
मम वासुपूज्य निजभोगी, जो पूजे ना हो रोगी ॥४९॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तदर्शन गुणमण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

सुख अमिट अतुल प्रकटाया, तब लौकिक सुख विघटाया।
वह बाग मनोहर भाया, जह अक्षय सुख को पाया ॥५०॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तसुख गुणमण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जो बल विस्मय उपजावे, वह अंत रहित कहलावे।
पा वासुपूज्य शिवशाला, मिट गया दुःख अब काला ॥५१॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तवीर्य गुणमण्डित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

१८ दोष से रहित १८ अर्घ्य

(लय—शांतिनाथ के पद पंकज...)

क्षुधा रोग को जीत लिया है, अनशन तप से भारी।
शाश्वत सुख को पाया तब तो, मिली सौख्य की क्यारी ॥
पूज्यपाद की चरण वंदना, भव के दुख को मेटे।
वासुपूज्य का भक्त शीघ्र ही, शिवललना से भेंटे ॥५२॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षुधा-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

धर्मामृत का पान किया सो, तृषा वेदना भागी।
अर्घ चढ़ाने आया पूजन, अभिलाषा जो जागी ॥
वासुपूज्य की जीवन गाथा, स्वर लहरी में गाये।
उसके फल में सुख पाने को स्वर्गपुरी में जावे ॥५३॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तृषा-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

नहीं बुढ़ापा नहीं देह ही, जर-जर होती तेरी।
तभी आप में भक्ति बढ़ी है, वासुपूज्य जी मेरी ॥

आम्रमंजरी देख कोकिला, मधुर बोलती प्यारी।
आप चरण की पूजा कर ले, दुर्गति मिटती सारी ॥५४॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जरा-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मृत्युराज को मार दिया सो, कभी न तुमको देखा।
पण्डित-पण्डित मरण करूँ मैं, मिट जावे अघ रेखा ॥
सौख्य-सम्पदा शुक्ल पक्ष के, शशि सम बढ़ती जावे।
वासुपूज्य का भक्त बने तो, विपदा लौट न आवे ॥५५॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मरणदोषरहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

जयावती की गोदी में आ अंतिम जन्म सु पाया।
इसीलिए अब कभी न जन्मों, निज में निज को ध्याया ॥
वासुपूज्य के पाद-पद्म की, पराग पीवे जो भी।
भ्रमर बना सा तव सम स्वामी, पद पावेगा वो भी ॥५६॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्म-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

देह रोग से घबरा करके, औषधि खाता जाता।
आत्मबोध के बिना नाथ मैं, दुख ही दुख को पाता ॥
रोग रहित हे वासुपूज्यजी, मेरा रोग मिटाओ।
अर्घ चढ़ाऊँ मुझको भी अब, वृष का पाठ पढ़ाओ ॥५७॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रोग-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

सातों भय का नाम निशाना, मेट दिया सो पूजूँ।
डर मिट जावे मेरा जिनवर, भव में अब नहिं जूझूँ ॥
लाख बहत्तर वर्ष आयु ले, इस धरती पर आये।
अंतिम-अंतिम मरण किया सो, वासुपूज्य सुख पाये ॥५८॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भय-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

विचित्र वस्तु को देख चित्त में, विस्मय सबको होता।
विस्मय दोष मिटा सो स्वामी, तव पद में मन खोता ॥

लाख अठारह बाल्यकाल में, देख सभी हरषाये।
बाल अरुण सम आभा वाले, मुलक-मुलक हम आवे ॥५९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विस्मयदोषरहित श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

चिदानंद को ध्याया है सो, रति न बची मैं ध्याऊँ।
रति मिट जावे तव पूजन से, मोक्षपुरी में जाऊँ॥
चाप[1] सुसत्तर ऊँचाई थी, वासुपूज्य के तन की।
भावों से यदि पूजे इच्छा, पूरी होती मन की॥६०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रति-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

इष्ट नहीं है, राग नहीं है, अनिष्ट लगता नाहीं।
धन्य-धन्य हो मेरा भी अब, राग मिटाओ साईं ॥
वासुपूज्य की पूजा कर ले, सुख पावेगा भारी।
क्योंकि इन्होंने शुक्ल ध्यान से, पायी पावन नारी॥६१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं राग-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

वैरी में अरु शत्रु वर्ग में, द्वेष न तुमको होता।
रूप मनोहर देख आपका, मन का आपा खोता ॥
अष्ट-द्रव्य मय अर्घ बनाकर, वासुपूज्य को अर्चूं।
अष्ट गुणों को पाकर शिव के, सुख पाने को हर्षूं॥६२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं द्वेष-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मोह भाव से पागल सा बन, आतम को मैं भूला।
निर्मोही को देख भक्त यह, भक्ति-भाव से झूमा ॥
लौकिक सुख की आशा तजकर, प्रभु को पूजो भाई।
आत्मिक सुख को पाओ बनकर, मोक्षमहल के राई[2] ॥६३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोह-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

परिग्रहों का जाल रहे तो, चिंता लगती भारी।
अहो आप निःसंग रहे सो, पाई है सुख क्यारी॥

---

१. धनुष, २. राज

वासुपूज्य का भक्त सदा, निश्चिन्त रहेगा स्वामी।
मात्र जपे यदि नाम आपका, जग में होगा नामी ॥६४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चिन्ता-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

तन में आता स्वेद यदा वह, सप्त धातु का होवे।
परमौदारिक देह बने जब, घाति कर्म को खोवे॥
वासुपूज्य के चार घातिया, अब तो स्वर्ग सिधारे।
सब कुछ भूला करुणानिधि जब उर में आप पधारे ॥६५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं स्वेद-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

निद्रा में जब आँखें होती, बंद तभी सब भूले।
जाग रहे तुम देख रहे पर, लालच में ना झूले ॥
वासुपूज्य ने निद्रा को तो, देश निकाला दीना।
नहिं पूजा यदि इनको तो हा ! सार्थक है क्या जीना ॥६६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निद्रा-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

कोई कर दे अपमानित तो, खेद - खिन्न हो जाता।
मान भाव से रहित आपका, अर्चन ही मन भाता ॥
वासुपूज्य ने मान तथा अपमान भाव को जीता।
तभी पूज्यवर उत्तम मंगल मम मन तुममें रीझा ॥६७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं खेद-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

मन-भावन का वियोग हो तो, शोक उपजता भारी।
शोक दोष से रहित आपकी, पूजा ही सुखकारी॥
वासुपूज्य से शोक दोष यह, बहुत दूर जा भागा।
तब तो मैंने आप दरश कर, मिथ्यातम को त्यागा ॥६८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शोक-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

वस्तु तत्त्व को जान लिया तो, मान कभी नहिं आवे।
मदमाता हो जावेगा तो, निज स्वरूप बिसरावे ॥

वासुपूज्य ने आठ मदों को जीता, शिव पद पाया।
पुलकित होकर तब तो मैं भी, पूजा करने आया ॥६९॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मद-दोष-रहित श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

(छन्द-ज्ञानोदय)

सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर पर, वासुपूज्य के चरण बने।
संभवजिन अरु अभिनंदन के, बीच पाँच शुभ युगल बने ॥
सौ-सौ मेरे भाग्य खुले सो, दरश आपके आज मिले।
मनहर सुन्दर अर्घ चढ़ाऊँ, ऐसा अवसर नित्य मिले ॥७०॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ...।

चम्पापुर मंदारगिरी में, वासुपूज्य का जन्म हुआ।
पंचम कल्याणक भी इस ही, धरती पर सम्पन्न हुआ ॥
गर्भ ज्ञान तप सब के सब ही, इस भू पर महकाये थे।
अर्घ चढ़ाऊँ स्वर्गी भी तव, पूजा करने आये थे ॥७१॥
ॐ ह्रीं चम्पापुर मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

(घत्ता)

हे सुरनर अर्चित, सबमें चर्चित, तेरी महिमा न्यारी है।
यह अवसर आया, मन को भाया, तव पूजा अघहारी है ॥
मैं अर्घ बनाकर, चरण चढ़ाकर, भाग्य जगाने आया हूँ।
मम भाग्य खुलेगा, मोक्ष मिलेगा, यही सोच हरषाया हूँ ॥७२॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः।

(९/२७/१०८)

जयमाला

(दोहा)

गुणमाला गुणशील की, जो बारम तीर्थेश।
बाल ब्रह्मचारी बने, गाऊँ मैं तज क्लेश॥

(ज्ञानोदय)

वासुपूज्य तुम मानसरोवर, भव्य जीव हम हंस रहे।
धर्म रूप शुभ मोती चुगने, आये तुम सुखकंद रहे॥
गर्भ-जन्म-तप कल्याणक पा, ज्ञान मोक्ष को पाया है।
शुद्धातम में लीन हुए सो, अमित सौख्य लहराया है॥१॥

चम्पापुर वह पूज्य बना जब, वासुपूज्य ने जनम लिया।
पूज्य बना मंदारशैल जब अंतिम-अंतिम मरण किया॥
मात अलौकिक जयावती अरु, पिता पूज्य वसुराजा के।
आँगन आये वासुपूज्य तो, बजे सुरीले बाजा थे॥२॥

वसुमद मिटते, वसुगुण मिलते, वासुपूज्य की अर्चा से।
वासव पूजित होता तेरी समय बितावे चर्चा में॥
वसुविधि मंगल द्रव्यों को ले, नाच-नाचकर पूजेंगे।
वासुपूज्य को उनके बन्धन, शीघ्र - शीघ्र ही छूटेंगे॥३॥
जयावती की गोदी को पा, सबमें विजयी आप हुए।
जिसने पूजा आप चरण को, उसके पातक साफ हुए॥
बचपन में ही पचपन जैसे, आप गहन गम्भीर रहे।
बाल ब्रह्ममय वासुपूज्य जी, आप लोक के तीर गए॥४॥

भोग-रोग सम दिखे तभी तो, बाल्यकाल में छोड़ दिये।
योग्य विषय को पाकर भी तो, इन्द्रिय गज को मोड़ दिये॥
होता है कल्याण आपके गर्भ जन्म से तप से भी।
भव्य जनों का तीन लोक में, अघ मिटते तव जप से ही॥५॥

आप रूप को देख लोक की, सब आभाएँ झुक जाती।
लाल कमल की आभा भी तो, लज्जित होकर छिप जाती ॥
शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, अष्ट कर्म मय ईन्धन को।
जला-जलाकर राख किया सो, बार-बार मम वन्दन हो ॥६॥

बाल ब्रह्मचारी बनकर भी, मुक्ति नगर की कन्या से।
शादी करके मौज उड़ाओ, लीन हुए उस रम्या में ॥
समता शुचिता वशिता क्षमता, आदि अनेकों ललनाएँ।
वासुपूज्य को पाकर प्रतिदिन, सेवा कर कर हरषाएँ ॥७॥

करुणासागर शरणागत के, शरण आप ही अनुपम हैं।
दीन दुखी के दुःख मिटाने, रहे चिकित्सक निरुपम हैं ॥
यौवन में ही वन में जाकर, जीवन सावन बना लिया।
तुम्हें पूजकर भव्य जनों ने, जीवन पावन बना लिया ॥८॥

शुक्लध्यान जब तीजा ध्याया, योगों का अवरोध हुआ।
लेश्या भी तब पूर्ण मिटी सो, सौख्य शिवालय सौध हुआ ॥
क्षुधा रोग को जड़ से तुमने, उखाड़ फेंका दूर कहीं।
सो पकवानों से नहिं मतलब, पाया वृष का सार सही ॥९॥

तृषा उपजती पाप उदय से, मूल मिटाया सद्य विभो।
इष्ट-मिष्ट स्वादिष्ट पेय से, रिश्ता क्यों हो पूज्य विभो ॥
रजतमालिका नदी किनारे, समवसरण को तज आये।
वेदनीय अरु नाम गोत्र को, नाश किया फिर शिव पाये ॥१०॥
एक वर्ष की मात्र तपस्या से ही, अघतम नाश हुए।
समवसरण तब बना लोक के सब जीवों के पास हुए ॥
छ्यासठ गणधर सहस बहत्तर मुनिवर धीरजवान रहे।
श्रावक थे दो लाख श्राविका चार लाख तव पाद कहे ॥११॥

पूज्य लाख दस सहस अर्जिका, छह बतलाई जिनवर ने।
छह सौ सत्तर के ऊपर छह, भूप बने सह मुनिवर थे ॥
वसुराजा के पुत्र आपकी, महिमा कैसे गा पाऊँ।
उत्साहित हो करके भी मैं, फिर-फिर पीछे हट जाऊँ ॥१२॥

शान्त सन्त अर्हन्त आपके, गुण गाने की क्षमता तो।
सुरगुरु में भी नहीं रही पर, आप गुणों में ममता जो ॥
उपजी मुझमें इस कारण ही, गुणगाने तैयार हुआ।
गुड़ खाकर के गूँगे से ज्यों, रस बतलाने काम हुआ ॥१३॥

सुमेरु जितने गुणगण तेरे, उसमें राई जितने भी।
वासुपूज्य जी कहने सुनने की ताकत है किसमें जी ॥
फिर भी कैसे चुप्पी साधूँ, आप दरश जो पाये हैं।
मन ही मन में हुलसित होकर, भाव उमड़ मम आये हैं ॥१४॥

सो स्वामी मैं बालक सम ही, लज्जा तज वाचाल हुआ।
भक्ति-भाव में भूल शक्ति को, मेरा मन यह बाल हुआ ॥
इसीलिए कुछ भक्ति सुमन ये, किए समर्पित चरणों में।
वासुपूज्य फल मिले यही मैं, रहूँ मात्र तव चरणों में ॥१५॥

विषय कषायों का बल मेरे, शीघ्र दूर हो जावे जी।
सौम्य भाव का, साम्य भाव का, पूर त्वरित आ जावे जी ॥
पूर्ण करूँ जयमाला मुझको, विजयमाल मिल जावे जी।
मोहराज की सेना मुझ पर, विजय नहीं अब पावे जी ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

आशीर्वाद

वसुराजा से, वासुदेव से, वासुपूज्य जिन अर्चित हैं।
स्वर्ग-लोक में मध्यलोक में, इन्द्रलोक में चर्चित हैं॥
ऐसे प्रभु का विधान जो भी, त्रय संध्या में करता है।
लौकिक सुख को पाकर के गतलौकिक सुख को वरता है॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि/क्षिपेत्

प्रशस्ति

(ज्ञानोदय)

शान्ति सिन्धु गुरु वीर सिन्धु श्री शिवसागर गुरु चर्चित हैं।
शिष्य रहे हैं उनके पहले ज्ञान सिन्धु जग अर्चित हैं॥
उनके पहले शिष्य पूज्य श्री विद्यासागर सूरि रहे।
तथा दूसरे विवेकसागर दीक्षा गुरु अघ चूरि कहे॥१॥

(दोहा)

क्षेत्र समसगढ़ में रहा, शान्तिनाथ का धाम।
पार्श्वनाथ मन्दिर यहाँ, चिंतित होते काम॥२॥
गुरुद्वय का आशीष यह, सदा रहे मम साथ।
विवेक गुरु की पाँचवी शिष्या से यह आज॥३॥
वासुपूज्य जिनदेव का, विधान रहा यह श्रेष्ठ।
लिखा गया प्रभु आपकी कृपा हुई जो जेष्ठ॥४॥
मार्गशीर्ष की कृष्ण तिथि, त्रयोदशी बुधवार।
वीर मोक्ष पच्चीस सौ, बयालीस सुखकार॥५॥
सूर्य रहे चंदा रहे, रहे धरा पर धर्म।
विधान यह जयवंत हो, जो देता शिव शर्म॥६॥

❑❑❑